क्या स्वर्ग है?

परमेश्वर के होने की बात सिद्ध हो जाने के बाद, अगला प्रश्न हो सकता है ''क्या स्वर्ग है ?'' नीचे दिए विचारों पर ध्यान कीजिए।

यदि स्वर्ग नहीं है, तो परमेश्वर अचेत है

परमेश्वर की पुस्तक लोगों को फलदायक होने अर्थात ''प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम'' (गलतियों 5:22, 23) रखने की शिक्षा देती है। बहुत से लोगों ने ये नौ के नौ फल लाकर अपने जीवन में सफलता पाई है।

नये सिरे से जन्म लिए हुए पापियों द्वारा एक बहुत बड़ा बदलाव एक पत्रिका के लेख में स्पष्ट रूप से बताए मसीही लोगों के फल लाकर होता है: ''आड़ू के बालदार बीज की तुलना इसके पेड़ बनने से करें जो सुगंधित फूलों और मीठे फल से लदा हुआ है।''[1] समर्पित मसीहियों द्वारा फैलाई जाने वाली महक से दूसरे लोग उनकी संगति करने के इच्छुक होते हैं।

परन्तु परमेश्वर द्वारा पापियों को अच्छा फल लाना सिखाने के बाद, स्पष्टत: और अन्तत:, वे सब मर जाते हैं। यदि कोई स्वर्ग नहीं है, तो वे लोग मरे ही रहेंगे, जिससे उनका सृष्टिकर्त्ता मूर्ख लगता है। उसने उन्हें क्यों बनाया, उन्हें उत्तम फल देना क्यों सिखाया, और फिर अन्त में उन्हें हमेशा के लिए मरने क्यों दिया? ऐसे परमेश्वर से तो जनरल मोटर्स के अधिकारी ही अधिक समझ रखते हैं, क्योंकि वे एक सुन्दर और शक्तिशाली कैडिलेक तैयार करने के लिए इंजिनियरों और निपुण कर्मचारियों को भाड़े पर लेकर इसे डूबने के लिए नदी में नहीं फैंक देते!

यदि स्वर्ग नहीं है, तो परमेश्वर अनैतिक है

लोगों को प्रेम की महानता के बारे में सिखाने के लिए, परमेश्वर को यीशु के लिए यह कहलाना आवश्यक था, ''इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे'' (यूहन्ना 15:13)। द्वितीय विश्वयुद्ध में, ऐसा ही प्रेम दिखाया गया था जब अमेरिकी सिपाहियों के एक गढ्डे में जर्मन लोगों द्वारा एक अनचला हथगोला फैंका गया था। इसके फटने से पहले ही, एक सिपाही इस हथगोले पर लेट गया। इस गोले के फटने से

वह सिपाही मौके पर ही मारा गया था, परन्तु उसने अपने चारों ओर के सिपाहियों को बचा लिया था। यदि कोई स्वर्ग नहीं है, तो उस बहादुर और नि:स्वार्थ सिपाही को हत्यारे हिटलर जैसा पुरस्कार ही मिलेगा, अर्थात वे दोनों सदा तक मरेंगे। जो परमेश्वर लोगों के साथ इस प्रकार व्यवहार करता है उसकी कोई नैतिकता नहीं है।

यदि कोई स्वर्ग नहीं है, तो परमेश्वर क्रूर है

परमेश्वर ने मनुष्य के मन में ''अनादि अनन्तकाल का ज्ञान उत्पन्न'' कर दिया है (सभोपदेशक 3:11)। इसीलिए, कोई सामान्य व्यक्ति सदा के लिए मरना नहीं चाहता, बल्कि उसे एक आनन्ददायक, न खत्म होने वाले अस्तित्व अर्थात ''अनन्त जीवन'' (तीतुस 1:2) की लालसा होती है। यदि परमेश्वर ने ऐसे आनन्ददायक भविष्य के लिए कोई स्थान उपलब्ध नहीं करवाया है, तो उसने हमारे मनों में अनन्तकाल को डालकर नीच काम किया है।

स्वर्ग है, तो नरक भी है

प्रेमी परमेश्वर, जो न तो बिना समझ के है तथा न ही अनैतिक है और न क्रूर, और जो हम सबसे अधिक बद्धिमान है, जानता है कि कुछ लोगों के लिए ''अनन्त आग'' (मत्ती 25:41) का स्थान उचित है। यद्यपि हमें यह समझ नहीं है कि स्वर्ग की तरह ही नरक भी क्यों वास्तविकता है, परन्तु हमने परमेश्वर की भलाई के इतने प्रमाण देखे हैं कि हम में उसका न्याय करने या उसकी आलोचना करने का साहस नहीं है।

वह हमें उस समय अस्तित्व में लाया जब उसे ऐसा करने की आवश्यकता नहीं थी, और उसने पापियों के लिए अपना प्रेम दिखाया है (रोमियों 3:23) जो सारे संसार के लिए है (यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 2:2)। वह प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8, 16) और न्याय के दिन कोई भूल नहीं करेगा। लोगों को नरक में भेजने पर उसे दुख होगा (यहेजकेल 33:11)।

पाद टिप्पणी

[1]डेविड वैन बियमा, ''डज़ हैवन एग्ज़िस्ट?'' *टाईम* (24 मार्च 1997): 70-78.